अगली सदी तक छोटे ग्लेशियर नदारद होंगे

यू.एस. और कनाडा के वैज्ञानिकों के एक दल ने अनुमान व्यक्त किया है कि वर्ष 2100 तक दुनिया के सारे छोटे ग्लेशियर पिघल चुके होंगे और मात्र इनकी वजह से समुद्र तल में औसतन 12 से.मी. की वृद्धि नज़र आएगी। इसमें अंटार्क्टिक और ग्रीनलैण्ड्स की बर्फीली चादर के पिघलने या बड़े ग्लेशियरों के पिघलने की वजह से होने वाली वृद्धि शामिल नहीं है। यह निष्कर्ष पूर्व में अंतर्राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन समिति (आईपीसीसी) के निष्कर्षों से मेल खाता है मगर साथ ही यह आईपीसीसी के उस निष्कर्ष को गलत ठहराता है जिसमें कहा गया था कि इस अवधि में हिमालय के सारे ग्लेशियर पिघल जाएंगे।

आईपीसीसी के निष्कर्ष बहुत थोड़े से ग्लेशियरों के आंकड़ों के आधार पर निकाले गए थे मगर ताज़ा अध्ययन में कुल मिलाकर 1,20,229 ग्लेशियरों और2638 हिमटोपियों के आंकड़ों को शामिल किया गया था। इस अध्ययन में विभिन्न मॉडल्स के आधार पर लगाए गए अनुमानों का औसत निकाला गया है। वैसे अभी भी ये ग्लेशियर कुल ग्लेशियरों के मात्र 40 प्रतिशत का ही प्रतिनिधित्व करते हैं मगर फिर भी ये निष्कर्ष ज़्यादा विश्वसनीय जान पड़ते हैं। छोटे ग्लेशियर उन्हें कहते हैं जिनका क्षेत्रफल 5 वर्ग कि.मी. या उससे कम हो।

जहां तक हिमालय के ग्लेशियरों का सवाल है, ताज़ा अध्ययन में कहा गया है कि ये काफी मज़बूत हैं और आईपीसीसी का अनुमान सही नहीं था और लगता है कि 2100 तक इनमें मात्र 10-15 प्रतिशत की कमी आएगी। मगर अन्य क्षेत्रों के ग्लेशियर काफी तेज़ी से पिघलेंगे। जैसे 2100 तक युरोपीय आल्प्स के ग्लेशियरों का 50-90 प्रतिशत, कॉकेसस के पर्वतों का 45-90 प्रतिशत, और न्यूज़ीलैण्ड की श्रृंखलाओं का 60-85 प्रतिशत बर्फ पिघल जाएगा। सबसे ज़्यादा नुकसान उन इलाकों का होगा जहां ग्लेशियर छोटे-छोटे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***